International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 114-115

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 114-115
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-11-2019
Accepted: 05-12-2019

ज्योति रानी
शोध छात्रा, म0 द0 वि0 रोहतक, हरियाणा, भारत।

Corresponding Author:
ज्योति रानी
शोध छात्रा, म0 द0 वि0 रोहतक, हरियाणा, भारत।

पं0 शिवनारायण विरचित भवतोषिणी टीका की समीक्षा

ज्योति रानी

प्रस्तावना

पं0 शिवनारायण शास्त्री ने विक्रम सम्वत् 2046 में 'सिद्धान्त कौमुदी' के भ्वादिगण पर भवतोषिणी टीका का प्रणयन किया। 'भवतोषिणी' के प्रारम्भ में आचार्य शिवनारायण ने धातु क्या हैं? धातुओं के दस गण, धातु पाठ की संज्ञाएं, पाणिनीप्रोक्त धातुपाठ में धातु–संकलन की शैली, भ्वादिगण का विश्लेषण, भ्वादिगण के धातु वर्गों का विवेचन, धातु–पाठ के धातु–पाठीय और दीक्षितीय वर्गीकरण की तुलना, आचार्य दीक्षित की शैली इत्यादि विषयों पर विस्तारपूर्वक–विवेचन दिया है।[1] आचार्य शिवनारायण ने दीक्षित द्वारा प्रोक्त एकीय धातुओं के अतिरिक्त शताधिक एकीय धातुओं को उनके स्रोत के साथ दिय है, भवतोषिणी में 37 धातुवर्गों की चर्चा की है, प्रत्येक धातुवर्ग का विश्लेषण धातुवर्ग की धातु सं0, अर्थभेद, पाठ–भेद से धातुभेद, धातुओं के क्रम में औचित्य, धातुओं में प्रयुक्त अनुवन्धों के प्रयोजन आदि पर विचार करते हुए सम्पूर्ण धातुवर्ग को 103 खण्डों में बाँटा गया है।

आचार्य शिवनारायण ने सूत्र–वृत्ति को अधिक सरल बनाकर प्रस्तुत किया है, सूत्र–व्याख्या में मतभेद की स्थिति होने पर धुर वार्तिककार से प्रारम्भ करके दीक्षित के टीकाकारों तथा पर्याप्त अर्वाचीन वैयाकरणों के मतों को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुए, तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है और साथ में आचार्य दीक्षित द्वारा आश्रित पक्ष की हेयता और उपदेयता भी बताई है।[2] व्याकरण–शास्त्र से सम्बन्धित दार्शनिक, व्याख्यात्मक तथा रूप सिद्धि आदि की दृष्टि से आवश्यक महत्वपूर्ण तत्वों की सप्रमाण तुलनात्मक पद्धति से व्याख्या की गई है, पाश्चात्य भाषा– वैज्ञानिक दृष्टि को भी अपनाया गया है।[3] धातुओं का अर्थ और स्वरूप निर्धारित करने के लिए वेद, निरूक्त आदि वेदाङ्गों, पुराण, धर्मशास्त्रों, काव्यों आदि का प्रचुर भाषा में प्रयोग किया गया है। धातुओं के रूप विस्तार प्रस्तुत या संक्षेप में देकर महत्वपूर्ण शब्दों की सिद्धियाँ भी दी गई है। ग्रन्थ के अध्ययन को सरल बनाने के लिए विस्तृत विषयानुक्रमणी दी गई है।

आचार्य शिवनारायण ने अपनी टीका में विभिन्न प्रकार के शब्दों, संज्ञाओं पर विवेचन की शुरूआत उनके मूल से की है, अर्थात् शब्द अथवा संज्ञा की उत्पति कैसे हुई और विभिन्न ग्रन्थों में उनके अर्थों पर विचार किया है। यथा ''ह्रस्व'' का अर्थ और इतिहास बताते हुए आचार्य शिवनारायण कहते है कि ''ह्रस्व'' शब्द का प्रयोग कम होना, क्षीण होना, छोटा होना अर्थों में होता है।[4] ''ह्रस्व'' धातु से 'उणादयों बहुलम्'[5] 'ह्रस्वं लघु'[6] सूत्र निर्देश से 'व' प्रत्यय करने पर ह्रस्व रूप बनता हैं, इसका अर्थ छोटा, बौना, क्षीण होना हैं।[7] इसका सर्वप्रथम प्रयोग ऐतरेय ब्राह्मण में उपलब्ध होता है– ''इति ह स्माह ह्रस्वो माण्डूकेय''[8] श्रौतसूत्रों में लघु के अर्थ में और प्रातिशाख्यों में 'लघु–स्तर' के अर्थ में प्रयोग मिलता है आचार्य शिवनारायण के मत में निर+ह्रस का प्रस्तुत अर्थ में प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।[9] इसी प्रकार अन्य शब्दों अथवा संज्ञाओं का इतिहास व अर्थ पर विस्तृत विवरण भवतोषिणी में उपलब्ध होता है यथा–धातु, दीर्घ, परोक्ष, अभ्यास आदि।[10]

आचार्य शिवनारायण ने क्रिया शब्द की व्याख्या व भेद के विषय में अग्रेंजी पद्धति, लैटिन, ग्रीक, और अवेस्ता भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। [11]

आचार्य शिवनारायण ने सूत्रों की सार्थकता,प्रयोजन पर विस्तार पूर्वक चर्चा की है, प्रस्तुत विषय पर आचार्य ने विभिन्न विद्वानों के मतों को न केवल प्रस्तुत किया है अपितु उन पर तर्क वितर्क भी प्रस्तुत किया है। दो सूत्रों के एकीकरण का सुझाव भी आचार्य ने अपने मत में दिया है, आचार्य शिवनारायण की दृष्टि में तासस्त्योर्लोपः[12] एवं '' रि च''[13] का एकीकरण करके सूत्र इस प्रकार होना चाहिए– ''तासस्त्योर्लोपो रि च'' एकीकरण के प्रयोजन पर भवतोषिणी मे आचार्य शिवनारायण ने विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण दिया है।[14] इसी प्रकार 'सदिरप्रतेः' एवं 'स्तम्भे'[15] सूत्रों की व्याख्या एवं एकीकरण सम्बन्धी विचार आचार्य शिवनारायण ने प्रस्तुत किए है।[16] इसी पर अन्य सूत्रों के विषय में भी आचार्य

शिवनारायण ने कुछ भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो भवतोषिणी में स्थान–2 पर दृष्टिगोचर होता है।[17]

वार्तिकों, परिभाषाओं पर अन्य विद्वानों के मतों के साथ साथ आचार्य शिवनारायण ने स्वयं के मत को भी प्रस्तुत किया यथा उद्योतकार की दृष्टि में (वुग्युटावुवङ्.यणोः सिद्धौ वक्तव्यौ)[18] वार्तिक अनावश्यक है परंतु आचार्य शिवनारायण ने सप्रमाण वार्तिक की आवश्यकता का प्रयोजन दिया है।[19] इसी प्रकार अन्य वार्तिकों की आवश्यकता, अनावश्यकता पर सप्रमाण विवेचन भवतोषिणी में स्थान स्थान पर उपलब्ध होता हैं।[20]

आचार्य शिवनारायण ने सूत्र और धातुओं के पाठ भेदों की भी चर्चा की हैं सूत्रों में 'अतो येय' 'लिङ्. सलोपोऽनन्त्यस्य' आदि सूत्रों के पाठ भेद विषयक विवरण भवतोषिणी मे देखा जा सकता है।[21]

'द्युषि कान्ति करणे' धातु पाठ पर विचार करते हुए आचार्य शिवनारायण ने अपने व्याख्यान में बताया है चान्द्र सम्प्रदाय में यह घंष् धातु है, दुर्ग, मैत्रेय, सायण, दीक्षित ने इसे घुंष् धातु माना है, क्षीरस्वामी ने 'घसि करणे' स्वीकार की है सभी के मतो पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए उनके गुण दोषों का उल्लेख करते हुए अन्त में आचार्य शिवनारायण ने क्षीरस्वामी और हेमचन्द्र की व्याख्या को उचित माना है।[22]

प्रस्तुत टीका आचार्य शिवनारायण की अदभुत विद्ववता और कठिन परिश्रम

की द्योतक हैं, इसका अनुमान हम ग्रन्थ के विस्तार से लगा सकते हैं, आचार्य शिवनारायण ने केवल भ्वादिगण पर लगभग 770 पृष्ठों पर भवतोषिणी टीका लिखी है जिसमें लगभग 280 से अधिक ग्रन्थ एवं ग्रन्थाचार्यो का विवरण उपलब्ध होता है। प्रस्तुत टीका पर सर्वाधिक प्रभाव काशिकावृत्ति , क्षीरतरङ्गिणी, प्रदीप कैयट, महाभाष्य, माधवीय धातुवृत्ति आदि का देखा जा सकता हैं।[23]

निष्कर्ष

आचार्य शिवनारायण ने भ्वादिगण के मङ.ला चरण से लेकर 'ऋतेरीयङ्' सूत्र तक व्याख्या की है। आचार्य शिवनारायण ने प्रत्येक विषय को मूल से उठाया है, विभिन्न शब्दों, संज्ञाओं के इतिहास से यह सिद्ध होता है।[24] 'क्रिया ' विषय पर अग्रेंजी, ग्रीक , लैटिन भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आचार्य शिवनारायण संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता है। आचार्य शिवनारायण को पाणिनीय व्याकरण के अतिरिक्त अन्य व्याकरणों का भी ज्ञान है। यथा– कातन्त्र, चान्द्र आदि, जिनके साक्ष्य भवतोषिणी में उपलब्ध होते है।[25] सूत्रों में प्रयुक्त निपातों यथा वा, च[26] आदि पर गहनता से विचार करते हुए, उनके ग्रहण का प्रयोजन भी सप्रमाण बताया है। भवतोषिणीकार ने पद पाठ में उदात अनुदात , स्वरित स्वरों की चर्चा भी स्थान स्थान पर की हैं जो उनकी अद्भुत विद्ववता को प्रदर्शित करते है।

प्रस्तुत ग्रन्थ अध्ययन का सर्वप्रमुख लाभ यह है कि एक ही ग्रन्थ के अध्ययन से हमें व्याकरण सम्प्रदाय की लगभग सम्पूर्ण परम्परा का ज्ञान हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ के अध्ययन को सुगम बनाने के लिए आचार्य शिवनारायण ने ग्रन्थ के अन्त में सन्दर्भग्रन्थ सूची, सूत्र सूची, वार्तिक सूची, श्लोक सूची , धातु सूची, तत्सम और तत्द्भ धातुओं की सूची और शुद्धि पत्र दिया है।[27]

सन्दर्भ

1. भवतोषिणी टीका पूर्वपीठिका पृ0 27
2. भवतोषिणी पृ0 176
3. भवतोषिणी पृ0 12, 18, 26, 28, 93
4. निरूक्तः– ह्रस्वो ह्रसते– 3.15
5. अष्टाध्यायी 3.3.1
6. अष्टाध्यायी 1.4.10
7. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी भवतोषिणी टीका पृ0 68
8. ऐतरेय ब्राह्मण 3.1.5
9. भवतोषिणी टीका पृ0 68
10. भवतोषिणी पृ0 11, 50, 60
11. भवतोषिणी टीका पृ0 18, 27, 28
12. अष्टाध्यायी 7.4.50, 1
13. अष्टाध्यायी 7.4.51
14. भवतोषिणी पृ0 102, 103
15. अष्टाध्यायी 8.3.66, 8.3.67
16. भवतोषिणी पृ0 251
17. भवतोषिणी पृ0 100, 111, 155, 254, 317, 345, 410, 418 आदि
18. मध्यसिद्धान्त कौमुदी पृ0 190
19. भवतोषिणी पृ0 78, 79
20. भवतोषिणी पृ0 276, 357, 393, 453, 488 आदि
21. भवतोषिणी पृ0 143
22. भवतोषिणी पृ0 477, 478
23. भवतोषिणी पृ0 770
24. भवतोषिणी पृ0 10, 43, 50, 60, 68
25. भवतोषिणी पृ0 8,477
26. भवतोषिणी पृ0 258
27. भवतोषिणी पृ0 773